पारिभाषिक शब्दावली का महत्व

आज के युग में पारिभाषिक शब्दावली का विशेष महत्व है। क्योंकि आज का युग वैज्ञानिक युग है और विज्ञान ने भाषा के सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक तथा बौद्धिक रूप को परिवर्तित करके इसे समृद्ध और व्यापक बनाने में भारी योगदान किया है। विभिन्न क्षेत्रों के सम्बद्ध में तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने के लिए तकनीकी शब्दों की आवश्यकता पड़ती है। पारिभाषिक शब्दावली सामान्य शब्दावली से भिन्न है। इसका निर्माण भाषा विशेषज्ञों द्वारा ही किया जाता है। भाषा विशेषज्ञ धातु, प्रत्यय, उपसर्ग आदि का उपयोग कर शब्दों में विविधता, विशिष्टता और अभिन्नता के द्वारा भाषा तथा शब्दों के संकुचित क्षेत्र को विस्तृत कर देते हैं। इस प्रकार वैज्ञानिक विकास के साथ-साथ वैज्ञानिक शब्दावली का भी देशव्यापी महत्व है।

जिन व्यक्तियों को तकनीकी शब्दावली का ज्ञान नहीं है, वे हिन्दी भाषी होते हुए भी विज्ञान और प्रौद्योगिकी में पारंगत नहीं हो सकते। वर्तमान के युग में किसी देश की प्रगति और उसकी समृद्धि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के व्यावहारिक उपयोग पर निर्भर करती है। पारिभाषिक शब्द एकार्थी होने के कारण अधिक सरल और स्पष्ट होते हैं। सामान्य भाषा में श्रोता को बात समझने के लिए अपने मस्तिष्क पर जोर देना पड़ता है, परन्तु पारिभाषिक शब्द उच्चारण मात्र से स्पष्ट हो जाता है। उदाहरण के रूप में 'ग्रीन रूम' शब्द को लिया जा सकता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है - 'हरा कमरा'। हरा कमरा कहने से हम ग्रीन रूम के अर्थ को समझ नहीं सकते। वस्तुतः यह एक पारिभाषिक शब्द है तथा इसका अर्थ है वह कमरा जिसमें कलाकार कार्यक्रम प्रस्तुत करने से पहले तैयार होते हैं। अर्थात् कलाकारों के तैयार होने का कमरा। इसका तात्पर्य यह हुआ कि पारिभाषिक शब्दावली का हमारे जीवन में विशेष महत्व है, क्योंकि इनके

Scanned with CamScanner

प्रयोग के बिना हम किसी विशेष क्षेत्र का ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकते। अतः पारिभाषिक शब्दावली ज्ञान-विज्ञान को अर्जित करने का महत्वपूर्ण साधन है।

हम जानते हैं कि हिन्दी को राजभाषा का पद 14 सितंबर, 1949 को भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् प्राप्त हुआ। तब अलग-अलग विषयों की शिक्षा हिन्दी में दी जाने लगी। उस समय अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों के लिए हिन्दी रूप निश्चित किए गए। इस दिशा में कुछ विद्वानों की भूमिका सम्मान योग्य है जिनके नाम हैं— डॉ॰ भोलानाथ तिवारी, डॉ॰ रघुवीर, डॉ॰ गोपाल शर्मा, डॉ॰ महेन्द्र चतुर्वेदी तथा डॉ॰ नरेश मिश्र। संस्थाओं के रूप में 'मानव संसाधन मंत्रालय' तथा 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' (प्रयाग) के अधीन कामकाज करने वाले वैज्ञानिक तथा तकनीकी आयोग के कार्य विशेष महत्त्व रखते हैं। इस आयोग के द्वारा ही अनुशासन से सम्बन्धित विभिन्न पारिभाषिक शब्दों का निर्माण किया जाता है। आज पारिभाषिक शब्दावली का आधार इतना सुदृढ़ एवं सरल हो चुका है कि विभिन्न विषयों का हिन्दी माध्यम से अध्यापन एवं अध्ययन सरल से सरलतम हो गया है।

Scanned with CamScanner